गोवा में कछुआ संरक्षण

रोशनी कुट्टी

गोवा - यह नाम मन में सूरज, रेत, समन्दर और ढेरों पर्यटकों की छवि उकेर देता है। ये पर्यटक अपने पीछे कचरे के ढेर और स्थानीय इकॉलॉजी की तबाही छोड़ जाते हैं। गोवा के अधिकांश रेतीले तटों की यह एक आम तस्वीर है। हालांकि, अब स्थानीय लोगों और राज्य सरकार के एक हिस्से में नई जागरूकता फैल रही है और वह यह कि इस तरह का पर्यटन ज़्यादा चलने वाला नहीं। यह तो सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी की गर्दन मरोड़ने जैसा ही है। पर्यटकों को लुभाने वाले और भी कई बेहतर तरीके हैं।

गोवा में पांव फैला रहे नए तरह के पर्यटन का एक उदाहरण है मोरझिम तट। उत्तर गोवा के पेरनेम तालुका के दो विख्यात समुद्र तटों वेगाटोर और हारमल के बीच का कम जाना पहचाना तट है मोरझिम। इस तट पर पर्यावरण क्षति काफी कम हुई है। यही कारण है कि यहां ऑलिव रेडले कछुए हर साल अण्डे देने आते हैं। लेकिन स्थानीय लोगों के अनुसार इस 'नन्हे चमत्कार' के कई अन्य योगदान भी हैं। गर्भवती कछुओं और अण्डों की चोरी रोकने के लिए स्थानीय लोग पूरे समय तटों की पहरेदारी करते हैं।

समुद्री कछुए

भारतीय समुद्र में पाए जाने वाले 5 प्रजातियों के कछुओं में से ऑलिव रेडले एक है। ये लगभग 2 फीट लम्बे और 600-700 किलोग्राम भार वाले छोटे कछुए हैं। अन्य समुद्री कछुए हैं : कछुए के सूप के लिए मशहूर ग्रीन टर्टल, अपने सुंदर कवच के लिए हॉक्सबिल और लॉजरहेड। इनमें से सबसे ज़्यादा पाए जाने वाले ऑलिव रेडले कछुए पूरे भारतीय समुद्री तट पर अपने घर बनाते हैं। वन्य सुरक्षा ऐक्ट, 1972 के तहत इसे प्रजाति - I (जोखिमग्रस्त) का दर्जा दिया गया है।

हालांकि समुद्री कछुए समुद्री जीवन से पूरी तरह से अनुकूलित हैं, लेकिन अण्डे देने के लिए इन्हें किनारों तक आना ही पड़ता है। समुद्र में समागम के बाद मादा समुद्र से कोई 10-12 मीटर दूर किसी ऊंचे स्थान पर कोई उपयुक्त जगह ढूंढती है। एक जगह पर 100-150 अण्डे देने के बाद मादा कछुआ उन्हें रेत से ढंक देती है और फिर अपने शरीर से रेत को ठोकती पीटती है। इसके बाद वह वापस समुद्र की ओर चल देती है। सूरज की गर्मी और उनके अपने चयापचयन से अण्डे सेए जाते हैं। लगभग 50 दिन रेत में गुज़ारने के बाद अण्डों में से कछुए निकलते हैं और तेज़ी से हरकत करते हैं और जैसे ही उनका घर टूटता है वे बाहर निकल पड़ते हैं। एक साथ निकलने की वजह से कम से कम कुछ कछुओं का तो बचना सुनिश्चित हो जाता है। आम तौर पर वे रात में निकलते हैं और समुद्री पानी पर झिलमिलाती चांदनी से समुद्र की स्थिति पहचानते हैं।

उस वक्त की स्थिति

जब कैप्टन गेरार्ड फर्नान्डीज़ अपने गांव टेम्बवडो में बसने आए। मोरझिम के स्थानीय बाज़ार में कछुए के अण्डों और मांस को बेचने के लिए इनका भारी मात्रा में शिकार होता था। लेकिन अब मोरझिम तट के सम्मुख बसा टेम्बवडो गांव अब कछुआ संरक्षण के लिए मशहूर हो चुका है। फौज से स्वैच्छिक निवृत्ति लेकर कैप्टन फर्नान्डीज़ अपने गांव में आकर बस गए। आज वे कछुआ संरक्षण मोर्चे के अगुआ हैं जिसे वे धीरे-धीरे अन्यों के हाथ सौंपना चाहते हैं। उनका

कहना है कि 'इस मुहिम को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए अन्यों की अगुआई ज़रूरी है।' जब फर्नान्डीज़ अपने गांव लौटे तो उन्हें कहीं भी अपने बचपन का गांव नज़र न आया; जो सामने था वह अनियंत्रित लालच के रोग का शिकार बना हुआ था। उन्होंने देखा कि कभी आत्मनिर्भर रहे परिवार छुटपुट रोज़गार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे थे। निर्माण व ट्रॉलर लॉबी और परम्पराओं में बदलाव के कारण टेम्बवडो के प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव चिन्ताजनक बात थी। सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात थी मोरझिम बीच पर ऑलिव रेडले कछुओं के अण्डों की चोरी।

सहभागी संरक्षण की शुरुआत

मोरझिम में कछुआ संरक्षण आंदोलन 1995-96 में शुरू हुआ। इसमें कैप्टन फर्नानडीज़ व उनकी पत्नी, ईंट बनाने वाले डोमिओ डी सिल्वा व प्रकाश सपटोजी, तट पर बनी कुटिया के मालिक गिल्बर्ट और डोमनिक फर्नान्डीज़ प्रमुख थे। इसके अलावा और भी कई स्थानीय मच्छीमार इसमें शामिल थे। संरक्षण की यह मुहिम एक धीमी प्रकिया थी। फर्नान्डीज़ दम्पति ने स्थानीय लोगों को संरक्षण के महत्व से रूबरू किया। और उन्हें बताया कि कैसे संरक्षण के ज़रिए इस क्षेत्र को एक सम्भावित पर्यटक स्थल में तब्दील किया जा सकता है। 1995-96 में संरक्षित जगहों से समुद्री कछुओं का छोड़ा जाना कछुओं-संरक्षण मुहिम की शुरुआत थी। इसे स्थानीय अखबारों में भी जगह दी गई थी। इसे प्रचार से स्थानीय वन विभाग की भी इसमें रुचि जागी। खास तौर पर मौजूदा उप वन संरक्षक (वन्य जीव) श्री सी.ए. रेड्डी की। इनकी सहभागिता से अगले सालों में इस मुहिम ने और तेज़ी पकड़ी।

कछुए के अण्डे जो मुर्गी के अण्डों से ज़्यादा गोल और मुलायम हैं, स्थानीय बाज़ार में 4 रु. प्रति नग के हिसाब से बिकते हैं जबकि मुर्गी के अण्डे 1 रु. प्रति नग में बिकते हैं। इसलिए मछुआरों के लिए कछुए के अण्डों का शिकार फायदे का सौदा था। कैप्टन का विचार था कि स्थानीय लोगों का सहयोग उन के समक्ष कोई आर्थिक विकल्प रखकर ही पाया जा सकता है। यहां वन्य जीव संरक्षण बाबत क्रांतिकारी बातें करने से काम नहीं चलने वाला। तो उन्होंने अपनी जमा पूंजी से 5,000 रु. के एक पुरस्कार की घोषणा की। यह पुरस्कार कछुओं के अण्डों की जगह बताने पर दिया जाना तय हुआ। इसने गांव वालों द्वारा खासतौर पर युवाओं द्वारा कछुओं के अण्डों को हड़पने पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रोक लगा दी। जो लोग फिर भी इनका शिकार करते पाए उन्हें इस हेतु हतोत्साहित किया गया क्योंकि एक छोटे समुदाय में इसे निरादर भाव से देखा जाने लगा था। एक समय के बड़े शिकारी रहे बूटिस फर्नान्डीज़, स्व बेंजामिन फर्नान्डीज़, आनन्द पेडनेकर और रत्नाकर हलंकर का स्वयं आगे बढ़कर अण्डों के स्थान बताना एक बड़ी उपलब्धि थी।

ऑलिव रेडली को लेकर बने माहौल ने मोरझिम आने वाले सैलानियों के अलावा शेष ग्रामवासियों का भी ध्यान आकृष्ट किया। कैप्टन कहते हैं, "गांव वालों ने इससे फायदा उठाने में देर न की। खास तौर पर तट पर बनी गुमटी वालों ने तुरंत ही यहां आने वाले विदेशी सैलानियों की 'किस्म' को पहचान लिया। उनके अनुसार पर्यटक भीड़ भरे अन्य स्थलों को छोड़ इस तट पर शांति और एकांत पाने आते। गुमटियों के मालिकों ने इसे पहचानकर कान फाड़ू संगीत चलाना बंद कर दिया व तट को साफ रखने लगे जिससे आवारा कुत्तों का आना कम हो गया।

ओलिव रेडले के अंडे

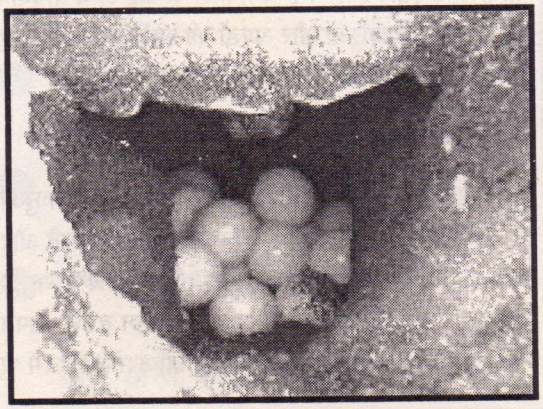

कछुओं का संरक्षण अब तट पर सैलानियों को आकृष्ट करने का एक साधन बन गया है। कछुओं के अलावा डॉलफिन और प्रवासी पक्षी भी आकर्षण का केन्द्र बने हैं।"

संयुक्त वन्य जीव प्रबंधन

1996-97 में वन विभाग भी इस प्रयास में शामिल हो गया। उसने प्रजनन काल में इस तट पर निगरानी हेतु 2 जवानों को तैनात कर दिया। इस तरह गांव के 30-40 युवा वॉलण्टियर और जवान मिलकर शिकारियों को पकड़ने में मदद करने लगे। इन तमाम प्रयासों से शिकार रुक गया है। सरकार प्रत्येक वॉलण्टियर को 500 रु. देती है। फर्नान्डीज़ के प्रयासों को देखते हुए गोवा सरकार ने उन्हें वन्य जीवन संरक्षण कार्य हेतु सम्मानित किया है। इस प्रयास को चलाए रखने के श्री रेड्डी के उत्साह के चलते गोवा वन्य विभाग ने कछुआ परियोजना शुरू की है। विभाग ऐसे छः स्थानीय युवाओं को दिहाड़ी के आधार भुगतान करते हैं जो तट पर रखवाली करते हैं और अण्डे देने व बच्चे निकलने की जानकारी देते हैं। पेर्नेम में कछुए को लेकर एक 'स्टडी सेंटर' शुरू किया गया है जो रेंज फॉरेस्ट ऑफिसर के कैम्पस में लगता है।

समस्याएं और भी हैं

हालांकि इस मुहिम को शुरू हुए पांच साल हो गए हैं लेकिन कछुओं पर मंडरा रहे असल खतरे से लड़ा जाना अभी बाकी है। यह खतरा दो तरफा है - ज़मीनी खतरा निर्माण कम्पनियों की ओर से है और समुद्री खतरा ट्रॉलर लॉबी की तरफ से है। कैप्टन फर्नान्डीज़ को भी शुरू-शुरू में इनकी तरफ से कुछ हमले झेलने पड़े थे लेकिन स्थानीय सहयोग के चलते ये लॉबियां अब सतर्क हो गई हैं।

पड़ोसी गांव विट्ठलदासवडो का भी समुद्री तट टेम्बवडो जैसा ही है। इसलिए पेर्नेम तालुका के एकदम उत्तर में अश्वेम और हारमल गांव तक कछुओं के अण्डे मिल जाएंगे। लेकिन कछुआ संरक्षण को लेकर विट्ठलदासवडो के लोगों की प्रतिक्रिया टेम्बवडोवासियों से भिन्न थी। तट के करीब की ज़मीन के मालिक डरते हैं कि कहीं कछुआ संरक्षण

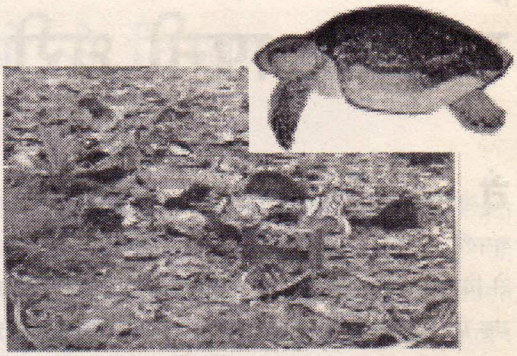

ऑलिव रेडले कछुए के बचे खुचे अवशेष

परियोजना से तटीय नियमन क्षेत्र कानून 1991 सख्ती से न लागू हो जाए। इससे आशय यह होगा कि वे यह ज़मीन बेच नहीं पाएंगे (खासतौर पर होटल लॉबी को) क्योंकि ज़मीन की कीमत कम हो जाएगी। कैप्टन फर्नान्डीज़ लोगों को इस बात के लिए राज़ी करने में लगे हैं कि वे अपनी ज़मीनें न बेचें। इसकी बजाए वे अतिरिक्त कमाई के उद्देश्य से अपने घरों की छतों पर पर्यटकों को किराए पर देने के लिए कमरे बना लें। इस तरह वे अपने पूर्वज़ों की ज़मीन को अपने पास रख सकते हैं, और पर्यावरण बचा भी सकते हैं। टेम्बवडो के निवासी तो इससे सहमत हैं लेकिन विट्ठलदासवडो के नहीं। हालांकि अण्डे देने की जगहों में वृद्धि होती प्रतीत हुई है लेकिन पिछले साल समुद्री पानी के अण्डों की जगह तक आ जाने से कछुओं के नए निकले बच्चे काफी मात्रा में मारे गए थे। गांव वालों का मानना है कि ऐसा गर्माती धरती के कारण हुआ। ऊंची उठती लहरों के कारण मोरझिम के रेत के टिब्बों का अपरदन हो रहा है।

गांव वाले इस बात से भलीभांति आगाह हैं कि ऑलिव रेडले कछुए के संरक्षण के प्रयास में उन्हें कई बड़े जोखिमों का सामना पड़ेगा। लेकिन वे इस तथ्य से हिम्मत ले रहे हैं कि वे गोवा में फैल रहे कछुआ संरक्षण मुहिम के अगुआ बन गए हैं। दक्षिण गोवा के गालगीबाग तट ने पिछले साल से मोरझिम की राह पर चलना शुरू कर दिया है। इस साल गालगीबाग के तट के सात घोंसलों से 573 कछुए के बच्चे छोड़े हैं। वाह क्या शुरूआत है। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***